32

शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आधार

डॉ. तृप्ति बिस्वास
सहा.प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
विभाग–मनोविज्ञान
राजीव गाँधी शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर
मो.न.– 9826350690

सारांश

भारत में प्रारंभ से ही शिक्षा का आधार दर्शन रहा है। विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में शिक्षा सूत्र और जीवन जीने के तरीकों का उल्लेख मिलता है। दर्शन से ही सही जीवन शैली का ज्ञान एवं आत्म ज्ञान, आत्म विश्लेषण, आत्मानुभव होता है। दर्शन से ही हमें शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबल रहने की शिक्षा भी मिलती है और यही कारण है कि भारतीय दर्शन की विशेषताओं से पश्चिम भी बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ और इतना ज्यादा प्रभावित हुआ की पश्चिमी देशों के मनोवैज्ञानिकों ने भारतीय दर्शन को आधार बनाकर मनोवैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करना प्रारंभ कर दिया। दार्शनिक तथ्यों की मात्रात्मक रूप से अध्ययन कर व्याख्या प्रस्तुत की गयी। इनमें श्रोडीगर, केन विल्बर इत्यादि के नाम उल्लेखनीय है। मानव चूँकि सामाजिक प्राणी है और वह जन्म लेते ही किसी न किसी समाज का सदस्य बन जाता है तो उसकी शिक्षा में सामाजिक वातावरण का प्रभाव भी बहुत रहता है । बालक विद्यालय में ज्यादा समय व्यतीत करता है वहा वह औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता है साथ ही साथी समूह से भी प्रभावित होता है । शिक्षा का उद्देश्य ही बालक का सर्वांगीण विकास करना है अर्थात बालक का व्यक्तिक , सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास ।

प्रस्तुत शोध आलेख में शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन में दर्शन के प्रभाव पर चर्चा की जाएगी ।

कुंजी शब्द शिक्षा दर्शन सामाजिक मनोवैज्ञानिक विकास

प्रस्तावना

शिक्षा की प्रमुख चार आधार शिलाएं है, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक, एवं वैज्ञानिक । दर्शन एवं शिक्षा के मध्य अटूट सम्बन्ध है। प्राचीन काल से ही शिक्षा का आधार दार्शनिक ही रहा है । शिक्षा मनुष्य को एक अच्छा इंसान बनाती है और दर्शन इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दर्शन से मनुष्य को सही जीवन जीने का तरीका बताती है । बालक शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं , समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है । दर्शन तथा शिक्षा की अलग–अलग ब्याख्या करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों का लक्ष्य व्यक्ति को सत्य का ज्ञान कराना तथा उसके जीवन को विकसित करना है । अतः दर्शन एवं शिक्षा आपस में गहरे रूप से जुड़े हुए ही नहीं है वरन दोनों एक दुसरे पर निर्भर भी है , क्योंकि दर्शन जीवन के उस वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करता है जिसे शिक्षा को प्राप्त करना है और दर्शन शिक्षा के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है । जे. एस. रास ने ठीक ही लिखा है दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं वे एक दुसरे के अन्तर्निहित है ।

शिक्षा के सामाजिक आधार से आशय यह है कि शिक्षा की व्यवस्था समाज की आवश्यकताओं , आकांक्षाओं और आदर्शों के आधार पर की जानी चाहिए । शिक्षा के द्वारा बालकों में ऐसे सामाजिक गुणों का विकास किया जाना चाहिए जिससे वह अपने कर्तव्यों का पालन कर सके , अधिकारों का उपयोग कर सके और समाज तथा प्रदेश के योग्य कुशल जागरूक और समर्पित नागरिक बन सकें । शिक्षा के द्वारा उन्हें समाज के साथ अनुकूलन करने की योग्यता विकसित करनी चाहिए । शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण का आधार उस समाज का जीवन दर्शन समाज की संरचना और उसकी धार्मिक , राजनीतिक , सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति होनी चाहिए । इस प्रकार शिक्षा का सामाजिक आधार इस बात पर बल देता है कि शिक्षा का आधार समाज हो , शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास हो सके ।

मन मस्तिष्क की वह क्षमता है जो मानव को चिंतन करने की शक्ति, स्मृति, निर्णय शक्ति, विवेक, बुद्धि, एकाग्रता, व्यवहार, अंतर्दृष्टि इत्यादि के योग्य बनाती है। सरल शब्दों में मन शरीर की वह प्रक्रिया है जो किसी तथ्य को आत्मसात करने सोचने और समझने का कार्य करता है। मनोविज्ञान में मन तथा इसके कार्य करने के विविध पहलुओं का

अध्ययन किया जाता है । मनोविज्ञान के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान पहले आत्मा का विज्ञान रहा है , फिर यह मस्तिष्क (मन) के विज्ञान के रूप में देखा गया फिर चेतना के विज्ञान के रूप में परिवर्तित होकर अंत में व्यवहार के विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ । शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार बहुत व्यापक है और शिक्षा विधि के क्षेत्र में उसकी देन अपरिमित है। इसमें व्यक्तिक भिन्नता का आज विशेष ध्यान दिया जाता है ।मनोविज्ञान शिक्षा में बालक को केंद्र बिंदु मानता है । शिक्षा की वयवस्था का आधार बालकों की रुचियों एवं आवश्यकताओं को माना है। मनोवैज्ञानिको ने शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यवहार के अध्ययन पर विशेष जोर दिया है। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रकार की वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करने पर बल दिया । इन विधियों के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यवहार से सम्बंधित सूचनाओ का संकलन करना है। शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षा में आने वाली समस्याओं एवं अवरोध के कारणों का अध्ययन किया जाता है ।चूँकि इसमें शिक्षा बालकेन्द्रित होती है अतः बालकों को शिक्षित करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है । बालक किस प्रकार ,किन परिस्थितियों में, किस प्रकार की शिक्षण प्रविधियों के माध्यम से ,किस गति से सीख सकता है। इन सब बातों की जानकारी शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा संभव है। मनोविज्ञान का शिक्षा से गहरा सम्बन्ध है । शिक्षा एक वांछित दिशा में या नियंत्रित वातावरण में व्यवहार का संशोधन है और मनोविज्ञान व्यवहार या व्यवहार के विज्ञान का अध्ययन है। व्यवहार को संशोधित करने या व्यवहार में कुछ बदलाव लाने के लिए व्यवहार के विज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षा और मनोविज्ञान तार्किक रूप से सम्बंधित है। विभिन्न विद्वानों ने भी इस बात पर जोर दिया है कि शिक्षा प्रणाली में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का सहारा लिया जाना चाहिए जिसमें पेस्तलोजी, मोंटेसरी आदि प्रमुख है। शिक्षा के लगभग सभी आयामों को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित किया जाता है। जैसे पाठ्यक्रम बनाना (आयु को ध्यान में रखकर, बालकों की सिखने की क्षमता के अनुसार) शिक्षा की सही विधि, टाइम टेबल ,स्कूल प्रशासन, व्यक्तिगत अंतर का पता लगाना, समस्या ग्रस्त बालकों को परामर्श, शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन विधि, आदि । इसके अतिरिक्त कक्षा शिक्षण वातावरण में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करना, व्यक्तिगत परामर्श व निर्देश, समूह गतिविधि आदि भी सिखने का मनोवैज्ञानिक आधार है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य शिक्षा में दर्शन समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान की उपयोगिता को स्पष्ट करने के साथ ही मुख्य रूप से पश्चिम के विद्वानो द्वारा भारतीय दर्शन के आधार पर किये गए विभिन्न अध्ययनों का उल्लेख करना है । पश्चिमी विद्वानों ने भारतीय दर्शन के महत्त्व की बहुत सराहना की और उसको आत्मसात करते हुए इसके आधार पर विभिन्न तथ्यों का अवलोकन कर सूक्ष्म अध्ययन किया है ।

पेपर का मुख्य भाग

अध्यात्म एक समग्र विज्ञान है। आधुनिक समय के नवीनतम अनुसंधानों में भी यही सत्य प्रमाणित हुआ है। भारत में प्रारंभ से ही शिक्षा का आधार दर्शन रहा है। विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में, शिक्षा सूत्रों में आदर्श जीवन जीने के तरीकों का उल्लेख मिलता है। सही जीवन यापन शैली का पता चलता है। दर्शन से ही आत्म ज्ञान, आत्म विश्लेषण, आत्मानुभव होता है। जैसे–जैसे विज्ञान नए अनुसन्धान करता जा रहा है, उसकी गति स्थूल से सूक्ष्म की ओर हो चली है। इसी के साथ ऋषि प्रणित सारे सूत्रों से निहित वैज्ञानिकता भी उजागर होने लगी है। इसी से प्रभावित होकर पश्चिमी देशों के अनेक वैज्ञानिको ने भारतीय दर्शन को आधार बनाकर तथ्यों की व्याख्या की । इसमें श्रोडीगर केन विल्बर इत्यादि प्रमुख हैं। श्रोडीगर का पहली बार भारतीय दर्शन से परिचय जर्मन दार्शनिक आर्थेर शोपेनहायर के लेखन के माध्यम से 1918 के आसपास हुआ था। सुभाष काक के अनुसार प्रमात्रा यांत्रिकी (क्वांटम मकेनिक्स) देने वाले इरविन श्रोडीगर बिस्तर के बगल में हिन्दू धर्म ग्रंथों की एक कॉपी रखते थे। उनका मानना था कि पश्चिम के विज्ञान को आध्यात्मिक जड़ता से पूरब ही बचा सकता है । भारतीय गाथाओं , दर्शन, और रहस्यवाद का चमकता पहलू विश्व को लुभाता रहा । यहाँ तक की यूनान लौटते समय सिकंदर अपने साथ एक योगी को ले गया ।अर्थात भारतीय विचारों ने पश्चिमी सोच पर गहरा असर डाला। आधुनिक विचारों ने भी तब आकार लिया जब पश्चिम ने जीवन के दो पहलुओं को माना । एक तो है प्रकृति के साथ सदभाव में रहना और दूसरा है सत्य के लिए वैज्ञानिक आधार की खोज । पिछले सौ बरस की बात करें तो पश्चिम के कई लेखक और वैज्ञानिकों ने भारतीय विचारों से प्रेरणा ली है । 20वी सदी की बड़ी बौध्धिक खोज प्रमात्रा भौतिकी में जो शानदार यांत्रिक सफलता मिली है उसके पीछे यही

सिद्धांत है। इस सिद्धांत को रचने वाले इरविन श्रोडीगर (1887–1961) ने इस सिद्धांत को पूरा करने से पहले 1925 में लिखा कि क्वांटम मकेनिक्स की खोज वेदांत के केन्द्रीय विचारो को रूप देने का प्रयास है। इरविन श्रोडीगर ने लिखा है आपका यह जीवन जो आप जी रहे हैं वह इस पूरे अस्तित्व का एक टुकड़ा मात्र नहीं है, बल्कि एक निश्चित अर्थ में सम्पूर्ण है। इसे ब्राम्हणों ने उस पवित्र और रहस्यवादी सूत्रों में बताया जो बहुत ही आसान है। वह सूत्र है, तत त्वंम असि, यह तुम हो । या फिर इन शब्दों मे, मैं पूरब में हूँ। मै पश्चिम में हूँ। मै ऊपर हूँ और नीचे हूँ। मै यह पूरा ब्रम्ह हूँ।

श्रोडीगर की 1944 में आई पुस्तक 'व्हाट इज लाइफ ' में भी वैदिक विचारों का उपयोग किया गया । आने के साथ ही यह पुस्तक विख्यात हो गई। डी. एन.ए.कोड की खोज करने वालों में से एक फ्रांसिस क्रिक का कहना था कि इसी पुस्तक ने उन्हें इतनी बड़ी खोज की राह दिखाई। वोल्टर मोर ने श्रोडीगर की जीवनी लिखी है । उनके अनुसार श्रोडीगर की वेदांत को लेकर समझ और उनकी रिसर्च के बीच एक निरंतरता है। वेदांत की निरंतरता और एकता तरंग भौतिकी (बेव मैकेनिक्स) में झलकती है जो प्रमात्रा भौतिकी का एक रूप है । अगले कुछ बरसों के दौरान श्रोडीगर , हाइजेनबर्ग और उनके अनुनाइयों ने एक ब्रम्हांड गढ़ा । यह नया विचार उस वैदिक अवधारणा से मेल खाता है , जिसके अनुसार सब कुछ एक में है । सच्चाई की खोज के लिए अपने अनुसन्धान के चलते वह एक वेदान्तवादी बन गए । वह वेद , योग और सांख्य दर्शन पर ग्रन्थ पढने फिर इसे अपने शब्दों में लिखा और फिर आखिरकार उन पर भरोसा करने लगे । उनके पसंदीदा ग्रन्थ थे उपनिशद और भगवद्गीता ।

केनेथ अर्ल बिल्बर अमेरिकी दार्शनिक,लेखक और प्रचारक, ट्रांस्पेर्सनल मनोविज्ञान के सिधांतकार । संयुक्त राज्य अमेरिका में वह सबसे अधिक अनुवादित अकादमिक लेखक हैं। आधुनिक विचारक की रचनाएँ चेतना और धर्म के विषयों को छूती हैं। केन विल्बर के काम की एक विशेषता वैज्ञानिक ज्ञान के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग है । पूरब के इतिहास के साथ पश्चिम के आधुनिक विचारों को एकीकृत करते हुए उन्होंने अपने आस–पास के व्यक्तिओ की धारणा, अभिवृत्ति पर नए तरीके से विचार करने का प्रयास किया । आधुनिक समाज में धर्म की भूमिका को ध्यान में रखते हुए उन्होंने प्राच्य साहित्य को प्राथमिकता दी । व्यक्ति का अध्ययन करने वाले विज्ञानों के क्षेत्र में आधुनिक ज्ञान की कमी को समझते हुए लेखक ने शोध के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण

को अपनाया । 1973 में केन विल्बर ने अपना पहला काम स्पेक्ट्रम ऑफ कौंशियसनेस पूरा किया । इसमें उन्होंने पश्चिम और पूर्व के मनोवैज्ञानिक स्कूलों को एकीकृत करने का प्रयास किया । केन की किताब थिओसोफिकल पब्लिशिंग हाउस क्वेस्ट बुक्स द्वारा प्रकाशित किया गया । 2006 में बिल्बर ने इंटीग्रल स्पिरिचुअलिटी" प्रकाशित किया । इसमें लेखक ने आध्यात्मिकता के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है । इसमें इन्होंने साधारण रूप से आधुनिक समाज में विज्ञान , धर्म और आध्यात्मिकता की भूमिका से सम्बंधित मुद्दों को प्रस्तुत किया है । वह धर्म पर ध्यान देने योग्य प्रथाओं, पूर्वी और पश्चिमी विचारों के महत्व को इंगित करता है । केन विल्बर ने अतीत के विचारों को आधुनिक वास्तविकता के अनुकूल बनाया ।यह किताब मनोविज्ञान और दर्शन के आधुनिक विचारों में रूचि रखने वाले लोगों के लिए है। यह पश्चिम के सुसंस्कृत विचारों के साथ पूरब के ज्ञानोदय के मार्ग को जोडती है । लेखक के अनुसार, ज्ञान के इन क्षेत्रों में से प्रत्येक दुनिया की समग्र तस्वीर बनाने और उसमें आध्यात्मिकता के लिए योगदान देता है । नो बॉर्डर्स " में लेखक इस ओर इंगित करता है कि हेर चीज केवल अनुभव की एक अमूर्त सीमा है । मनुष्य एवं पर्यावरण के सम्बन्ध में एक दिलचस्प वक्तव्य दिया गया है । केन के अनुसार , प्रकृति हमारे विचार से बहुत अधिक स्मार्ट है । अन्य लोगों के प्रति घृणा का उदय किसी के गुणों की अवमानना से होता है । ये उद्धरण न केवल आत्म सुधार का एक साधन है , बल्कि दुनिया की पूरी समझ भी है।

दुनिया के पहले परमाणु हथियार विकसित करने के लिए मैनहट्टन परियोजना का नेतृत्व करने वाले जे रौबर्ट ओपेनहाइमर ने संस्कृत सीखी ताकि वह भगवत गीता को अपने मूल रूप में पढ़ सकें । जब उन्होंने पहला परमाणु बम विस्फोट देखा तो उन्होंने गीता के एक श्लोक को याद किया जिसमे कृष्ण अर्जुन अपना असली रूप दिखाते हैं । उसने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया ,"अब मैं मृत्यु हो गया हूँ , दुनिया का विध्वंशक ।

निष्कर्ष

इस तरह से स्पष्ट है कि पूरब के दर्शन से प्रभावित होकर पश्चिम के विद्वानो ने ना केवल उसकी सराहना की बल्कि उसे आत्म सात कर उसके मूल धारणाओं को समझा, जाना और आधुनिक पश्चिमी विचारों के साथ जोड़कर नए तरीकों से उसकी व्याख्या की और एक नए

दृष्टिकोण का विकास किया और दर्शन तथा शिक्षा को एकीकृत कर मनुष्य के विचारों को विस्तार दिया ।

सन्दर्भ सूची

- attimes.indiatimes.com
- literature.awgp.org
- https://ebooks.lpude.in
- https://hin.agromassidayu.com/uilber-ken-citat......
- https://hi.vikaspedia.in
- https://navbharattimes.Indiatimes.com
- https://rpscadda.in
- https://vigyan-ki-kitab..
- www.samareducation.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के विभिन्न आयाम

National Education Policy 2020:
Different Dimensions of Education in the Present Scenario

संपादक मंडल

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद